Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 10, October - 2026

DOIs:10.2018/SS/202610021 --:-- Research Paper / Article / Review

त्रिलोचन के काव्य में कृषक जीवन का सामाजिक यथार्थ और जनपदीय अनुभव

श्रद्धा सिंह [1], डॉ. शिवांगी सिंह [2]
[1.] शोधार्थी, डॉ. के. एन. मोदी यूनिवर्सिटी, नेवाई, राजस्थान
[2.] शोध निर्देशिका , डॉ. के. एन. मोदी यूनिवर्सिटी, नेवाई, राजस्थान
vaibhav741986@gmail.com

शोध-सार: प्रस्तुत शोधपत्र त्रिलोचन के काव्य में कृषक जीवन को श्रम, पारिवारिक संबंध, जातिगत संरचना, स्त्री-अनुभव और स्थानीय भाषा के परस्पर संबंधों में समझने का प्रयास करता है। अध्ययन चुनिंदा काव्यपाठों तथा उनसे संबंधित आलोचनात्मक लेखों पर आधारित है। गुणात्मक और व्याख्यात्मक पद्धति के अंतर्गत 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती', 'नगई महरा' और 'अमोला' से संबंधित प्रसंगों का विषयगत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का केंद्रीय तर्क है कि त्रिलोचन की जनपदीयता का आधार केवल ग्रामीण परिवेश नहीं, बल्कि उस परिवेश में श्रम करने वाले व्यक्तियों की आवाज और सम्मान है। उनके यहाँ अभाव के साथ स्वाभिमान, सामुदायिक सहयोग के साथ सामाजिक नियंत्रण तथा शिक्षा की संभावना के साथ प्रवासन की चिंता उपस्थित होती है। कृषि और प्रकृति का संबंध भी आजीविका, प्रतीक्षा और अनिश्चितता से जुड़कर अर्थ ग्रहण करता है। इन प्रसंगों से निष्कर्ष निकलता है कि त्रिलोचन का कृषक संसार गाँव के आदर्शीकरण के स्थान पर उसकी अंतर्विरोधपूर्ण संरचना को सामने लाता है। यह अध्ययन चयनित साहित्यिक प्रसंगों तक सीमित है; इसके निष्कर्ष समूचे ग्रामीण समाज के सांख्यिकीय या सर्वेक्षणपरक निष्कर्ष नहीं हैं।

कुंजी शब्द: त्रिलोचन; कृषक जीवन; सामाजिक यथार्थ; जनपदीयता; श्रम; ग्रामीण स्त्री; लोकभाषा।

1. प्रस्तावना

त्रिलोचन के काव्य में गाँव केवल दृश्यावली नहीं है। वह काम करते हुए मनुष्यों, उनकी आवश्यकताओं, रिश्तों और बोलचाल से निर्मित जीवन-संसार है। खेत और हरियाली के साथ पशुपालन, भोजन, घरेलू श्रम, जाति और शिक्षा की उपस्थिति ग्रामीण अनुभव को कई स्तरों पर खोलती है। इसीलिए उनके काव्य में कृषक जीवन का अध्ययन केवल प्रकृति-वर्णन या किसान की आर्थिक कठिनाइयों के विवरण तक सीमित नहीं रखा जा सकता। उसका संबंध इस प्रश्न से भी है कि साधारण मनुष्य कविता में अपनी विशिष्ट पहचान और आवाज किस प्रकार प्राप्त करता है।

रविरंजन त्रिलोचन की कविता में लोकजीवन से लिए गए नाम से पहचाने जाने वाले पात्रों की उपस्थिति को महत्त्व देते हैं [1]। यह संकेत उपयोगी है, क्योंकि नाम से पहचाने जाने वाले पात्र किसी अमूर्त ग्रामीण समूह की जगह अपने विशिष्ट व्यवहार, अनुभव और निर्णयों के साथ सामने आते हैं। चंपा की जिज्ञासा और असहमति तथा नगई के पारिवारिक और सामाजिक संबंध ग्रामीण जीवन को भीतर से देखने की संभावना बनाते हैं। यहाँ व्यक्ति की छोटी लगने वाली प्रतिक्रिया भी व्यापक सामाजिक संबंधों का संकेत बन सकती है।

इस शोधपत्र की स्थापना है कि त्रिलोचन का कृषक यथार्थ श्रम और संबंधों के साझा आधार पर निर्मित होता है। अभाव, शिक्षा और सामाजिक मर्यादा के प्रसंगों को अलग-अलग रखने के बजाय उनका अंतर्संबंध देखना आवश्यक है। ऐसा करने पर जनपदीयता स्थान-विशेष का परिचय भर नहीं रहती; वह मनुष्य, समुदाय और परिवेश के संबंध को समझने की साहित्यिक दृष्टि बनती है।

2. आलोचनात्मक पृष्ठभूमि और शोध उद्देश्य

उपलब्ध आलोचना त्रिलोचन की लोकसंवेदना, ग्रामीण पात्रों और सहज भाषा को उनके काव्य की प्रमुख विशेषताओं के रूप में सामने लाती है। रविरंजन की चर्चा जीवनानुभव और कविता के संबंध को रेखांकित करती है [1]। सुबोध शुक्ल जनपदीयता को सामाजिक अंतर्विरोधों और सामान्य जीवन की घटनाओं के संदर्भ में पढ़ते हैं [2]। 'अमोला' पर ओम निश्चल का लेख अवधी, बरवै और खेती के अनुभव की विशिष्टता स्पष्ट करता है [3]। इन आलोचनात्मक संकेतों से यह समझ बनती है कि त्रिलोचन की सहजता के भीतर अनुभव की जटिलता को देखना जरूरी है।

वर्तमान अध्ययन किसी समग्र साहित्य-समीक्षा के आधार पर यह दावा नहीं करता कि कृषक जीवन के इन पक्षों पर पहले विचार नहीं हुआ है। इसकी समस्या अधिक सीमित है। यह शोधपत्र इस केंद्रीय प्रश्न पर केंद्रित है कि श्रम, स्थानीय संबंध और पात्रों की वाणी मिलकर कृषक जीवन की कैसी साहित्यिक संरचना बनाते हैं। इस केंद्र से स्त्री-श्रम, सामाजिक नियंत्रण और प्रकृति पर निर्भरता को एक साथ पढ़ा जा सकता है।

अध्ययन का पहला उद्देश्य भूमि, श्रम और आजीविका के अंतर्संबंध को स्पष्ट करना है। दूसरा उद्देश्य शिक्षा, प्रवासन और स्त्री-अनुभव के माध्यम से ग्रामीण जीवन के बदलते संबंधों को समझना है। तीसरा उद्देश्य जाति, समुदाय और लोकभाषा की भूमिका का परीक्षण करना है, ताकि जनपदीयता को केवल स्थानीय रंग के रूप में पढ़ने की सीमा सामने आए।

इन उद्देश्यों के आधार पर तीन प्रश्न निर्मित होते हैं। त्रिलोचन की कविता श्रम और अभाव के बीच व्यक्ति की गरिमा को किस प्रकार सुरक्षित रखती है? चंपा और नगई से संबंधित प्रसंग शिक्षा, परिवार तथा समुदाय के अंतर्विरोध कैसे व्यक्त करते हैं? स्थानीय भाषा और प्रकृति-संबंधी अनुभव कृषक जीवन को साहित्यिक रूप देने में क्या भूमिका निभाते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर चयनित प्रसंगों की व्याख्या से प्राप्त किए गए हैं।

3. शोध पद्धति

यह गुणात्मक साहित्यिक अध्ययन है। अध्ययन की प्रारंभिक सामग्री त्रिलोचन के कृषक जीवन पर केंद्रित अध्याय है। उसके प्रमुख तर्कों का परीक्षण उपलब्ध काव्यपाठ और आलोचना के संदर्भ में किया गया है। 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' का पाठ हिन्दवी पर उपलब्ध एनसीईआरटी से लिए गए संस्करण से देखा गया है [4]। 'नगई महरा' संबंधी विश्लेषण में सुबोध शुक्ल के पाठाधारित विवेचन का सहारा लिया गया है [2]। 'अमोला' के संबंध में ओम निश्चल के लेख में दिए गए उदाहरण और विवेचन तक विश्लेषण सीमित रखा गया है [3]। पूरे संग्रह के प्रत्यक्ष पाठ का दावा नहीं किया गया है।

विश्लेषण की इकाई वह प्रसंग है जिसमें आजीविका, पारिवारिक भूमिका, सामाजिक मर्यादा या स्थानीय ज्ञान का कोई संबंध खुलता है। प्रमुख प्रसंगों को पहले श्रम, स्त्री-अनुभव, समुदाय, भाषा और प्रकृति जैसे विषयों में व्यवस्थित किया गया। इसके बाद पाठ में उपस्थित घटना तथा उससे निकाले गए आलोचनात्मक अर्थ के बीच अंतर रखते हुए व्याख्या की गई। प्रत्यक्ष उद्धरण सीमित रखे गए हैं और मुद्रित संस्करण की अनुपलब्ध पृष्ठ-संख्याएँ अनुमान से नहीं जोड़ी गई हैं।

यह पद्धति साहित्यिक प्रतिनिधित्व का अध्ययन करती है। कविता में किसी जाति, पेशे या संबंध की उपस्थिति अपने आप पूरे समाज का प्रमाण नहीं बनती। इसी प्रकार पारिस्थितिकीय दृष्टि यहाँ पाठ को समझने का वर्तमान विश्लेषणात्मक साधन है; इसे कवि द्वारा प्रतिपादित किसी औपचारिक पर्यावरण सिद्धांत के रूप में नहीं लिया गया है।

4. श्रम आजीविका और स्वाभिमान

कृषक जीवन में भूमि उत्पादन का आधार होने के साथ परिवार की अपेक्षाओं और स्मृतियों से जुड़ी रहती है। उसका महत्त्व केवल संपत्ति के आर्थिक मूल्य तक सीमित नहीं है। बोआई से कटाई तक के लंबे अंतराल में श्रम का परिणाम अनिश्चित बना रहता है। तैयारी पूरी होने पर भी मौसम और उपज का परिणाम निश्चित नहीं होता। यह संबंध कृषक अनुभव को समझने की उपयोगी पृष्ठभूमि है।

'अमोला' पर ओम निश्चल के विवेचन में सिंचाई, उपयुक्त दशा में बीज डालने और उपज मिलने की अनिश्चितता से जुड़ा उदाहरण मिलता है [3]। उस उदाहरण से खेती में व्यावहारिक ज्ञान और परिणाम पर सीमित नियंत्रण का संबंध समझ में आता है। यहाँ आशा काम से अलग कोई भाव नहीं है। वह किए गए श्रम के सफल होने की अपेक्षा है, जिसमें जोखिम भी शामिल है। इस संबंध की पहचान कृषि-प्रसंग को सजावटी प्रकृति-चित्र से अलग अर्थ देती है।

ग्रामीण आजीविका को केवल खेत जोतने वाले भूस्वामी किसान तक सीमित करना भी पर्याप्त नहीं है। कृषक जीवन की व्यापक अवधारणा में पशुपालन, घरेलू काम और सेवा-आधारित कार्य भी शामिल हैं। इस दृष्टि से कृषक जीवन एक विस्तृत सामाजिक क्षेत्र है, जिसमें अलग-अलग काम और असमान स्थितियाँ मौजूद हैं। सभी ग्रामीण पात्रों को एक ही वर्ग या पेशे का प्रतिनिधि मानना उनकी विशिष्टता को कम कर देता है।

श्रम की निरंतरता और उपलब्ध संसाधनों की कमी का एक साथ उपस्थित होना अध्ययन का महत्त्वपूर्ण बिंदु है। अभाव का अर्थ श्रम का अभाव नहीं है; अनेक बार वह कठोर श्रम के बावजूद पर्याप्त सुरक्षा न मिलने की स्थिति है। त्रिलोचन के ग्रामीण संसार को इस संबंध में पढ़ने से व्यक्ति की कठिनाई व्यक्तिगत अक्षमता के बजाय सामाजिक व्यवस्था से जुड़ा प्रश्न बनती है।

इस अध्ययन की स्थापना है कि गरीबी पात्र की संपूर्ण पहचान नहीं बनती। ग्रामीण व्यक्ति इच्छा, हास्य, आत्मसम्मान और निर्णय की क्षमता के साथ उपस्थित होता है। इस स्थापना का आलोचनात्मक महत्त्व है। यदि पाठक अभाव को ही पात्र का अंतिम परिचय मान ले, तो वह उसके सामाजिक व्यवहार और विचार को देख नहीं पाता। सहानुभूति आवश्यक होते हुए भी व्यक्ति की अपनी आवाज का स्थान नहीं ले सकती।

त्रिलोचन के नाम से पहचाने जाने वाले पात्र इसी सीमा पर ध्यान खींचते हैं। वे किसी सामान्य समस्या के उदाहरण मात्र नहीं रह जाते। उनके बोलने और प्रतिक्रिया करने का ढंग उनके अनुभव की विशिष्टता बचाए रखता है। रविरंजन द्वारा रेखांकित लोक-पात्रों की उपस्थिति इसी अर्थ में महत्त्वपूर्ण है [1]। इससे कविता में साधारण जीवन की वह गरिमा निर्मित होती है जिसे केवल आर्थिक स्थिति के आधार पर नहीं मापा जा सकता।

कृषक स्वाभिमान को अभाव की महिमा के रूप में पढ़ना उचित नहीं होगा। व्यक्ति की गरिमा स्वीकार करने का अर्थ कठिन परिस्थितियों को स्वीकार्य घोषित करना नहीं है। यह अंतर त्रिलोचन के यथार्थ को संतुलित ढंग से समझने में मदद करता है। कविता अभाव का अनुभव सामने लाती है और साथ ही उस अनुभव से जूझते मनुष्य को केवल दया का पात्र बनने से बचाती है।

5. स्त्री-श्रम शिक्षा और प्रवासन

'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' में चंपा का चरवाही करना उसके दैनिक जीवन का ठोस पक्ष है [4]। इस अध्ययन में इस प्रसंग को ग्रामीण स्त्री-श्रम की पहचान से जोड़ा गया है। इस आधार पर यह विचार किया जा सकता है कि परिवार की आजीविका में योगदान देने वाला काम हमेशा औपचारिक पहचान नहीं पाता। पशुओं की देखभाल और घरेलू जिम्मेदारियों को कृषि अर्थव्यवस्था से अलग कर देने पर ग्रामीण जीवन का एक बड़ा हिस्सा दृष्टि से बाहर हो जाता है।

शिक्षा का प्रश्न भी केवल अक्षरज्ञान की कमी का वर्णन नहीं है। चंपा की प्रतिक्रिया स्थानीय जीवनानुभव और औपचारिक शिक्षा के बीच दूरी को सामने लाने वाला प्रसंग है। इसे समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि किसी नई सुविधा का अर्थ व्यक्ति अपने परिचित संबंधों के आधार पर ग्रहण करता है। सीखने की आवश्यकता और दैनिक जीवन की तत्काल माँग के बीच तनाव को केवल अज्ञान कहकर समाप्त नहीं किया जा सकता।

प्रवासन इस तनाव को और गहरा करता है। चंपा के कलकत्ता संबंधी प्रतिरोध को पारिवारिक दूरी की चिंता से जोड़कर पढ़ा जा सकता है। इस व्याख्या में शहर आय का संभावित स्रोत है, लेकिन परिवार के लिए प्रियजन की अनुपस्थिति का अनुभव भी है। आजीविका की आवश्यकता और साथ रहने की इच्छा का यह टकराव ग्रामीण आधुनिकीकरण की भावनात्मक कीमत समझने का आधार बनता है।

इस प्रसंग से शिक्षा का विरोध उचित सिद्ध नहीं होता। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि शिक्षा की उपयोगिता को स्थानीय अनुभवों और पारिवारिक संबंधों की चिंताओं के संदर्भ में समझना चाहिए। चंपा की असहमति को अंतिम निर्णय मानने के बजाय उसे सुनने योग्य अनुभव मानना अधिक उपयुक्त है। इसी से पात्र की सक्रियता सुरक्षित रहती है और शिक्षा का प्रश्न भी अधिक मानवीय रूप में खुलता है।

6. समुदाय लोक-नैतिकता और जनपदीय भाषा

'नगई महरा' से संबंधित विवेचन गाँव को सामाजिक सहयोग और नियंत्रण के साझा क्षेत्र के रूप में सामने रखता है। बिरादरी, पंचायत और पारिवारिक संबंध लोकजीवन की संस्थाएँ हैं; उनका प्रभाव केवल एक दिशा में नहीं होता। समुदाय व्यक्ति को पहचान और सहारा देता है, लेकिन स्वीकार्य आचरण की शर्तें भी निर्धारित करता है। सामाजिक अपनापन और सामाजिक दबाव का यही सहअस्तित्व इस प्रसंग को जटिल बनाता है।

सुबोध शुक्ल की व्याख्या में नगई और उसकी घरनी का जीवन नैतिकता तथा सामाजिक पदानुक्रम के तनाव को समझने का आधार बनता है। इस विवेचन में जातिगत पहचान का प्रश्न भी स्पष्ट है [2]। फिर भी उसे केवल जाति का उदाहरण बनाकर पढ़ना पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति की कार्यकुशलता, आत्मसम्मान और पारिवारिक निकटता भी उसके जीवन की संरचना में शामिल हैं। सामाजिक स्थिति और मानवीय व्यक्तित्व के बीच यह अंतर बनाए रखना आवश्यक है।

लोक-नैतिकता को सर्वसम्मत और निष्पक्ष मान लेने से वह शक्ति अदृश्य हो सकती है जिसके आधार पर कुछ संबंधों का मूल्यांकन किया जाता है। यहाँ विचारणीय है कि पवित्रता, प्रतिष्ठा और मर्यादा के निर्णय सामाजिक असमानता से अलग नहीं रहते। इसी कारण किसी पात्र के अपने जीवन पर निर्णय लेने की क्षमता और समुदाय के नियमों के बीच तनाव पैदा होता है।

यहाँ गाँव का एकतरफा निषेध भी उपयुक्त नहीं होगा। संबंधों में सहयोग, बातचीत और साथ रहने की संभावना मौजूद रहती है। त्रिलोचन के कृषक संसार की विशेषता इन विरोधी पक्षों को एक साथ देखने की गुंजाइश में है। लोकजीवन की आत्मीयता की पहचान उसकी असमानताओं की आलोचना को रोकती नहीं; बल्कि निकट अनुभव के आधार पर उस आलोचना को अधिक ठोस बनाती है।

स्थानीय भाषा अनुभव का केवल बाहरी आवरण नहीं है। काम, रिश्ते, मौसम और सामाजिक व्यवहार से जुड़े शब्द अपने साथ उपयोग की स्मृति लाते हैं। मानक भाषा में उनका अर्थ बताना संभव हो सकता है, पर उस शब्द के साथ जुड़ा संबोधन, निकटता या सामाजिक अंतर हर बार उसी तरह व्यक्त नहीं होता। इस आधार पर जनपदीय भाषा को सांस्कृतिक स्मृति का माध्यम समझा जा सकता है।

'अमोला' पर चर्चा में अवधी और उसके स्थानीय भेदों का महत्त्व सामने आता है [3]। इससे यह प्रश्न उठता है कि कृषक अनुभव का अध्ययन भाषा के उस व्यावहारिक ज्ञान को कितना स्थान देता है जो काम करते हुए अर्जित होता है। कृषि-क्रिया का देशज नाम अनुभव के संचरण का माध्यम भी है। इसलिए लोकभाषा का उपयोग केवल प्रामाणिकता का प्रभाव पैदा करने तक सीमित नहीं रखा जा सकता।

संवाद पात्र को अपने दृष्टिकोण से बोलने का अवसर देता है। कथावाचक का दृष्टिकोण कविता से हटता नहीं, लेकिन पाठ में दूसरी आवाजों के लिए जगह बनती है। इससे पाठक को पात्र के कथन और उसके सामाजिक संदर्भ के बीच संबंध स्वयं पहचानना पड़ता है। सरल लगने वाली भाषा इस प्रक्रिया में विचार की जटिलता वहन करती है। उसकी सहजता को विचारहीनता या काव्यगत कौशल की अनुपस्थिति समझना गलत होगा।

जनपदीयता की व्यापकता भी इसी बिंदु पर खुलती है। भूख, सम्मान, प्रेम और बिछोह जैसे अनुभव विशिष्ट शब्दों और व्यक्तियों के माध्यम से सामने आते हैं। स्थानीयता उन्हें सीमित करने के बजाय ठोस जीवन स्थितियाँ देती है। इस प्रकार जनपद एक बंद सांस्कृतिक इकाई नहीं, अनुभव को समझने का निकट आधार बनता है।

7. प्रकृति पर निर्भरता और कृषक अनुभव

प्रकृति को कृषक जीवन में सौंदर्य और उपयोगिता के संयुक्त अनुभव के रूप में पढ़ा जा सकता है। वर्षा की सुंदरता फसल की संभावना से अलग नहीं रहती और हरियाली श्रम की सफलता का संकेत भी हो सकती है। इस दृष्टि

का अर्थ प्रकृति को केवल उत्पादन साधन मानना नहीं है। उसका आशय यह है कि कृषक के लिए परिवेश का भावात्मक और व्यावहारिक अनुभव अक्सर एक साथ निर्मित होता है।

पशुओं की देखभाल भी मनुष्य और मानवेतर जीवन की दैनिक निकटता का आधार है। भोजन, स्वास्थ्य और श्रम की जरूरतें परिवार तथा पशुओं को एक साझा दिनचर्या में जोड़ती हैं। इस संबंध से प्रकृति-संबंध की ऐसी व्याख्या संभव होती है जिसमें जीवित परिवेश मानव जीवन की पृष्ठभूमि भर नहीं रहता। वह जीवन की व्यवस्था और समयबोध में सक्रिय भूमिका निभाता है।

प्रतीक्षा इस अनुभव का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। कृषि में तत्काल परिणाम का अभाव निरीक्षण और निरंतर प्रयास की आवश्यकता उत्पन्न करता है। 'अमोला' के संदर्भ में खेती की अनिश्चितता का संकेत इस व्याख्या को सीमित पाठाधार देता है [3]। हालांकि उससे समूचे संग्रह की पर्यावरण-दृष्टि का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। अधिक व्यापक निष्कर्ष के लिए संग्रह के अन्य पाठों और उनके संदर्भों का परीक्षण जरूरी होगा।

प्रकृति पर निर्भरता का प्रभाव संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार अलग हो सकता है। यहाँ यह कथन विश्लेषण की संभावना है, किसी सर्वेक्षण का परिणाम नहीं। सामाजिक असुरक्षा और पर्यावरणीय अनिश्चितता को साथ पढ़ने से कृषक जीवन की जटिलता स्पष्ट होती है, लेकिन कविता पर वर्तमान नीतिगत अवधारणाएँ सीधे आरोपित करने से बचना आवश्यक है।

8. विवेचन और अध्ययन की सीमाएँ

विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि श्रम कृषक संसार में आजीविका का साधन होने के साथ पहचान और सम्मान का आधार है। स्त्री-अनुभव दिखाता है कि कृषि जीवन की सीमा खेत के बाहर घरेलू और पशुपालन संबंधी कामों तक जाती है। समुदाय का अध्ययन बताता है कि सुरक्षा और सामाजिक नियंत्रण साथ उपस्थित रह सकते हैं। भाषा इन संबंधों को सामान्य कथन में विलीन होने से बचाती है और प्रकृति पर निर्भरता जीवन की लय तथा जोखिम को समझने में मदद करती है।

इन पक्षों को जोड़ने से जनपदीयता का एक संबंधपरक अर्थ सामने आता है। स्थान, व्यक्ति और काम अलग-अलग तत्व नहीं रहते; वे एक-दूसरे का अर्थ खोलते हैं। यही इस शोधपत्र का मुख्य विश्लेषणात्मक योगदान है। यह किसी नई सामाजिक खोज या अब तक अज्ञात तथ्य का दावा नहीं, बल्कि उपलब्ध सामग्री को एक संगत तर्क में व्यवस्थित करने का प्रयास है।

अध्ययन चयनित प्रसंगों और उपलब्ध डिजिटल पाठों पर आधारित है। 'अमोला' का उपयोग आलोचनात्मक लेख के माध्यम से हुआ है। त्रिलोचन के समस्त संग्रहों, सभी ग्रामीण पात्रों अथवा ऐतिहासिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया गया है। अतः निष्कर्षों की वैधता इसी साहित्यिक सीमा में है। आगे मूल संग्रहों के प्रामाणिक संस्करणों के साथ पाठ-विस्तार और अन्य कृषक कवियों से तुलना इस विवेचन को अधिक पुष्ट कर सकती है।

9. निष्कर्ष

त्रिलोचन के काव्य में कृषक जीवन को केवल गरीबी, हरियाली या ग्राम्य आत्मीयता की किसी एक छवि में नहीं समेटा जा सकता। चयनित प्रसंगों का विश्लेषण बताता है कि उसका सामाजिक यथार्थ श्रम, संबंध और मानवीय स्वाभिमान के मेल से बनता है। शिक्षा और प्रवासन के प्रसंग परिवर्तन की आवश्यकता के साथ उसकी पारिवारिक कीमत सामने लाते हैं। जाति और समुदाय के प्रसंग निकटता के भीतर मौजूद असमानता को पहचानने की माँग करते हैं।

जनपदीय भाषा इस संसार को उसकी विशिष्ट आवाज देती है। प्रकृति और पशुओं से निकटता कृषक जीवन की उस संरचना को स्पष्ट करती है जिसमें जीविका और परिवेश परस्पर जुड़े हैं। इस प्रकार त्रिलोचन की जनपदीयता का महत्त्व गाँव को आदर्श घोषित करने में नहीं, बल्कि उसकी जटिलता में जीते हुए मनुष्य को साहित्यिक केंद्र में स्थान देने में है। चयनित प्रसंगों के स्तर पर यही निष्कर्ष उनके कृषक काव्य की सामाजिक और मानवीय सार्थकता को स्पष्ट करता है।

संदर्भ सूची

1. रविरंजन। "त्रिलोचन की पाठशाला में कविता का क ख ग"। हिंदी समय। अभिगमन-तिथि: 22 अक्टूबर 2010।
2. शुक्ल, सुबोध। "त्रिलोचन : संसार को 'जनपद' बनाती कविता"। हिंदी समय। अभिगमन-तिथि: 20 अप्रैल 2018 ।
3. निश्चल, ओम। "'अमोला' त्रिलोचन की अपूर्व काव्यशक्ति का परिचायक है"। द रज़ा फ़ाउंडेशन, 16 जून 2020।
4. त्रिलोचन। 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती'। आरोह, भाग 1। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2022, पृ. 126। हिन्दवी पर उपलब्ध पाठ।